"काली हल्दी"

की व्यावसायिक खेती

दुर्लभ जड़ी बूटी

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

परिचय

काली हल्दी आयुर्वेद का एक महत्वपूर्ण पौधा है। इसका वानस्पतिक नाम कुरकुमा केसिया है और ये पौधा जीजिबेरेसी कुल से है, और उपयोग में आने वाला भाग है इसका कंद। यह पौधा मूलतः भारत का है, हमारे देश का मध्य व दक्षिण क्षेत्र एवं असम इसके उत्पादन के प्रमुख प्रदेश है।

काली हल्दी एक दुर्लभ जड़ी बूटी है। काली हल्दी के पौधे को कभी-कभी सजावटी पौधे के रूप में उगाया जाता है, लेकिन जड़ का उपयोग सदियों से औषधीय और धार्मिक उद्देश्यों के लिए किया जाता रहा है। काली हल्दी नारंगी रंग की हल्दी के समान लाभ प्रदान करती है, लेकिन गहरे रंग की हल्दी में किसी भी अन्य कुरकुमा प्रजातियों की तुलना में कर्क्यूमिन की उच्च मात्रा होती है। भारत में स्वास्थ्य और धार्मिक उद्देश्यों के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

इसमें कोई संदेह नहीं की यह पौधा एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है जिसका उपयोग लोग विभिन्न बिमारियों के लिए करते है, इसे छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में बहुत शुभ मन जाता है क्योंकि उनका मानना है की जिस व्यक्ति के पास यह है उसे कभी भी भोजन की कमी नहीं होगी। उत्तरी जनजातियां बुरी आत्माओं को दूर रखने के लिए काली हल्दी का उपयोग ताबीज की तरह करती है, देश के कुछ हिस्सों में इसका उपयोग तांत्रिक साधना में किया जाता है।

औषधीय गुण-

काली हल्दी के सूखे कंद में 76.6% डी-कैम्फर, 1.6% एसेंशियल ऑयल, 8.2% कैम्फीन और बोर्निलीन और 10.5% सेस्क्यूटरपीन, करक्यूमाइन, आयोनोन और टर्मेरोन पाया जाता है। इसमे एंटीबैक्टिरीअल, एंटीफंगल गुण पाए जाते है, जिसका औषधीय प्रयोग मस्तिष्क और हृदय के लिए टॉनिक, लुकोडर्मा, बवासीर, कुष्ठ रोग, स्वास रोग, अस्थमा, टुमर, ऐलर्जी, कैंसर, बुखार, घाव, उल्टी होना, मासिक धर्म के विकार, कृमिनाशक, कामोद्दीपक और सूजन के उपचार में प्रयोग किया जाता है। वही इसके दूसरे प्रयोग जैसे की- रंग सामग्री, मसाले और सौंदर्य प्रसाधन के रूप में तथा धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है।

पीली हल्दी की तरह काली हल्दी भी स्किन के लिए लाभकारी होती है। पौधे का कंद सुगंधित होता है, इसमें असेंसियल ऑइल होता है और इसका उपयोग विभिन्न प्रकार से उपयोग किया जाता है। काली हल्दी के कंद की विशिष्ट तीखी गंध होती है जो की इसमे मौजूद कपूर और स्टार्च के कारण होती है।

यह पौधा गुणों से परिपूर्ण है और इसकी खेती आसानी से की जा सकती है तथा कम लागत तकनीक को अपनाकर इसे आमदनी का एक अच्छा साधन बनाया जा सकता है।

जलवायु-

काली हल्दी को बढ़ने के लिए गर्म और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। इसके पौधे को आंशिक धूप में गर्म क्षेत्रों में उगा सकते है। यह पौधा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिलने वाली सूर्य की रोशनी को पसंद करता है। जब वायुमंडल का तापमान 10° से.ग्रे. से कम हो जाता है तो हल्दी के पौधे के विकास पर प्रभाव पड़ सकता है।

भूमि का चुनाव-

काली हल्दी की खेती के लिए उपजाऊ जमीन की आवश्यकता होती है। इसकी खेती हल्के काले, राख लोम और लाल मिट्टी, दोमट मिट्टी, काली मिट्टी या बलुई दोमट मिट्टी में सफलतापूर्वक की जाती है। खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। यदि जमीन थोडी अम्लीय है तो उसमें हल्दी की खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। पौधा बढ़ने के पूरे काल में जमीन को नम रखना आवश्यक है और वाटर सोलुबल खाद का उपयोग करना अच्छा माना जाता है।

खाद एंव उर्वरक-

काली हल्दी की खेती में जैविक खादों एंव उर्वरकों का इस्तेमाल करना चाहिए, जैविक खाद जैसे की-

- केचुवे का खाद/ वर्मीकम्पोस्ट - पौधे के लिए पोशाक तत्व प्रदान करता है,
- नीम की खली- जमीन में उपस्थित किटकों को मारता है,
- जिप्सम पाउडर- जमीन को भुरभुरा रखने में मदद करता है, और
- ट्रायकोडर्मा फफूंद नाशक पाउडर- जो जमीन में उपस्थित हानिकारक फफूंद को मारने में उपयोगी है।

ये चारों खाद नीचे बताए गए विधि से जमीन तयार करते समय खेत में फैलाने है।

भूमि की तयारी-

काली हल्दी की खेती में भूमि की अच्छी तैयारी करनी चाहिए, क्योंकि यह जमीन के अंदर होती है जिससे जमीन को अच्छी तरह से भुरभुरी बनाया जाना आवश्यक है। जमीन की 1.5 फुट गहरी जुटाई करें, उसमे जैविक खाद को समान मात्रा में फैलाए उसके बाद मिट्टी और खाद को मिलाए। मिट्टी को बारीक/ भुरभुरा बनाएं।

मिट्टी में 2 फुट चौड़े बेड/मेड का निर्माण करे जिसकी ऊंचाई 1 फुट तक हो। काली हल्दी के खेती में बेड के ऊपर ढकने के लिए प्लास्टिक की मलचींग शीट का उपयोग करने से खरपतवार निकालने के खर्चे में कमी आ सकती है। उसके साथ ही सिंचाई के लिए बूंद- बूंद सिंचाई यानि ड्रिप इरगैशन सिस्टम के इस्तेमाल से काफी मात्रा में पानी की एंव खर्चे की बचत के साथ साथ उत्पादन में भी 15-25% बढ़ोतरी देखी गई है।

काली हल्दी को लगाने का समय-

काली हल्दी को लगाने का सही समय जून के शुरुवात से जुलाई के आखिर तक है लेकिन अगर जमीन अच्छी, उपजाऊ है और पानी भरपूर मात्रा में उपलब्ध है तो आप इसकी खेती किसी भी महीने से शुरू कर सकते है।

बीज की मात्रा और लगाने का तरीका-

काली हल्दी की बुवाई हेतु प्रति एकड़ 10,000 गांठो की आवश्यकता होती है। एक पौधे से दूसरे पौधे की दूरी 2 फुट और दो लाइन के बीच का अंतर 2 फुट होना चाहिए। गाँठो को लगाने के पहले एक सिंचाई करे जिसमे देसी गाय का गोमूत्र प्रति एकड़ 10 लीटर, 100 लीटर पनि में मिलाकर और ट्रायकोडर्मा फफूँदनाशी पाउडर प्रति एकड़ 1000 ग्राम, 100 लीटर पनि में मिलाकर कर ड्रिप के सहायता से दे। उससे जमीन में मौजूद हानिकारक तत्व नष्ट हो जाएंगे।

बीज का उपचार-

काली हल्दी के गाँठो को तयार जमीन में लगाने से पहेले उसे उपचारित करना जरूरी है। एक बर्तन में 10 लीटर पानी ले। उसमे 2 लीटर गोमूत्र और 100 ग्राम ट्रायकोडर्मा पाउडर मिलाए। घोल में काली हल्दी के गाँठो को 5 से 10 मिनट तक रखे और उसमे से निकाल कर जमीन में लगाए। तयार बीज को जमीन में 2 से 3 इंच गहराई पे तय जगह पे गाढ़ दे। हल्दी के कंद पूरे खेत में लगाने के तुरंत बाद सिंचाई करे।

सिंचाई-

सिंचाई के दौरान या बाद में जमीन में पानी जमा ना होने दे। बारिश के पानी को जल्द से जल्द खेत से बहर निकाल दे। लेकिन ध्यान रहे पौधे के जड़ों के पास हर समय नमी होनी जरूरी है। आपके जमीन की पानी धारण क्षमता एंव मौसम के अनुसार पानी देने की आवश्यकता में बदलाव हो सकता है।

निराई एवं गुड़ाई-

हल्दी की अच्छी फसल होने हेतु 2-3 निराई करना आवश्यक हो जाता है। पहली निराई बुआई के 60-80 दिनों बाद तथा दूसरी निराई इसके एक माह बाद करना चाहिए। किन्तु यदि खरपतवार पहले ही आ जाते है तथा ऐसा लगता है कि फसल प्रभावित हो रही है तो इसके पहले भी एक निराई की जा सकती है। इसके साथ ही साथ समय-समय पर गुड़ाई भी करते रहना चाहिए जिससे वायु संचार अच्छा हो सके।

प्रमुख रोग, किट एवं नियंत्रण-

पर्णदाग (लीफ ब्लोच), प्रकन्द गलन, तना छेदक, राइजोम स्केल, हल्दी थ्रिप्स इस प्रकार के के रोग और किट काली हल्दी में देखे जा सकते है। इन कीटों की रोकथाम के लिए आप हमारी संस्था से संपर्क कर सकते हैं।

खुदाई एवं उपज-

काली हल्दी की फसल 8 से 9 महीने में खोदने लायक हो जाती हैं। खुदाई करते समय ध्यान रखे की प्रकंद न कटे, न छिले और न ही भूमि में रहे। वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने पर काली हल्दी की पैदावार 70 से 75 क्विंटल प्रति एकड़ प्राप्त हो जाती है। यह ध्यान रहे की कच्ची हल्दी सूखाने के बाद 20-25 प्रतिशत तक रह जाती है।

बीज प्रकन्दों का भण्डारण-

काली हल्दी की खेती में बीज सामग्री के लिए रखी गई कंदों को हल्दी के पत्तों से ढँककर अच्छे हवादार कमरों में रखना चाहिए। बीज कंदों को लकड़ी के बुरादे, रेत, ग्लाइकोस्मिस पेन्टाफिल्ला (पाणल) के पत्तों आदि से भरे हुए गड्ढ़ों में भी रखा जा सकता है। इन गड्ढ़ों को हवादार बनाने के लिए एक या दो छिद्र युक्त लकड़ी के तख्तों से ढंकना चाहिए।

प्रति एकर कुल खर्चे- 9 महीने

ब्योरे	कार्य	कुल कीमत
जमीन तैयार करना	जुताई, बेड तैयार करना इ.	3,000
बीज	400 किलो कंद @ Rs.350/प्रति किलो	140,000
जैविक खाद	जैविक कीटनाशक, ग्रोथ बूस्टर ई.	20,000
सिंचाई	पर्याप्त पाणी छोड़ने के लिए	3,000
बुवाई	कंद को जमीन में लगाना	2,000
अन्य खेत के काम	निंदाई, गुड़ाई और अन्य देखभाल	2,000
बिजली का बिल	सिंचाई के लिए	1,000
कटाई	कंद ज़मीन से निकालना	2,000
कटाई पश्चात काम	धुलाई और ग्रेडिंग	2,000
संपूर्ण खर्च (9 महीने)	**Rs.175,000/-**	

प्रति एकर कुल आय- 9 महीने

पैदावार	बायबैक कीमत	कुल कीमत
3000 किलो, गीले परीपक्व कंद (सफ़ेद को छोड़कर)	रु.100/- प्रति किलो	रु.300,000/-
कुल खर्चे		रु.175,000/-
शुद्ध आय/ नफ़ा (9 महीने)		**रु.112,000/-**

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

COMPANY PROFILE

Click-N-Grow Agroventures Pvt. Ltd.

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

KisanZone Farmer's e-Buddy | MITCAD | Contract Farming | KisanSAT Agro Advisory Services | Agri Export Grow Farmer, Grow india

INTERLINKED FARM SOLUTIONS AT ONE PLACE

Click-N-Grow Agroventures Pvt. Ltd.

Corporate Address: C/17-18, Dakshata Nagar Complex, Sindhi Camp, Akola, Maharashtra- 444001
Registred Office: C/2, Matoshri Apt, Sane Guruji Nagar, Khadki, Akola, Maharashtra- 444004

Mobile: +91-7775008660, 7030281210, 9730951149

Email: ekisanzone.com | info.mitcad@gmail.com | ekisanzone1@gmail.com

Website: www.ekisanzone.com | www.kisansat.ekisanzone.com